

# 循義查成語詞典

王葆仁 李共德 史繼德



吉林人民出版社

作文

两用

求解

# 循义查成语词典

王葆仁 · 李共德 · 史继德 编

吉林人民出版社

# 循 义 查 成 语 词 典

王葆仁 李共德 史继德 编

※

吉林人民出版社出版 吉林省新华书店发行  
长春市东新印刷厂印刷

※

787×1092毫米64开本 6 印张 132 000字  
1990年7月第1版 1990年7月第1次印刷  
印数: 1—5 650册

IS·N 7—206—00824—0

---

Z · 21 定 价: 3.00元

# 前 言

汉语成语相当丰富，成语言简意赅。写文章，如果适当地运用成语，定会收到画龙点睛之效。然而，成语数量之大，浩如烟海，一般的人，尤其是学生，所记数量有限，欲用时不能挥笔而书，这时就需要翻阅一下成语词典。可是，现有的成语词典均属一种类型，都以成语为条目，后附释义和例句，其目的是供阅读求解之用。这类成语词典不便于写作使用。为了运用成语时查找方便，几年前出版一种分类成语词典，不过，要想查找一个成语仍然相当麻烦，得先找到其应属于的意义类别，然后再逐条搜寻，为了更便于查找成语，我们特设计一种新型的《循义查成语词典》。

本词典以意义作条目，其后给出相应的成语。成语中的生僻字和多音字均有注音和简明的解释。意义条目按汉语拼音字母顺序编次。一个意义若有两个相近的成语，均列其后，归属一个条目；一个成语若表示两个意义，则分别列入两个义条。写作者若想使用某一成语而不确知其为何，翻阅所要表达的意思条目即可查到相应的成语。例如，查阅“做事情因只差一点就放下了而没能完成”这一义条，便可找到“功亏一篑”这一成语。

本词典正文后附有成语条目索引，按音序排列，每一成语后指出其释义所在的页码。按照成语条目往回查阅，可当作一般的成语词典供查寻成语释义使用。

本词典堪称名副其实的**作文用词典**，共选编**6817**条义项，**7006**条成语，可供具有中等以上文化程度的人写作之用，尤其可供大、中、小学生学习写作之用。

这种编排方法是一种新的尝试，加之我们水平有限，不适宜之处一定不少，有待改进和提高，希望读者指正。

编者

1939年元旦

|       |     |      |     |       |     |
|-------|-----|------|-----|-------|-----|
| 挨风缉缝  | 186 | 爱惜羽毛 | 248 | 八方呼应  | 57  |
| 挨肩擦背  | 140 | 爱憎分明 | 1   | 八九不离十 | 238 |
| 挨门逐户  | 216 | 安不忘危 | 243 | 八面玲珑  | 29  |
| 挨三顶五  | 139 | 安步当车 | 109 | 八面威风  | 150 |
| 哀兵必胜  | 163 | 按部就班 | 2   | 八仙过海， |     |
| 哀而不伤  | 4   | 按部就班 | 247 | 各显神通  | 57  |
| 哀感顽艳  | 268 | 安分守己 | 1   | 八字没一撇 | 159 |
| 哀鸿遍野  | 39  | 安家落户 | 243 | 拔刀相助  | 256 |
| 哀梨蒸食  | 17  | 安居乐业 | 1   | 拔茅连茹  | 73  |
| 哀莫大于心 |     | 安民告示 | 239 | 拔苗助长  | 185 |
| 死     | 263 | 安然无恙 | 128 | 拔山扛鼎  | 104 |
| 哀丝豪竹  | 65  | 安如磐石 | 189 | 拔十得五  | 101 |
| 哀痛欲绝  | 4   | 安如泰山 | 189 | 拔树寻根  | 257 |
| 哀矜勿喜  | 19  | 安守本分 | 1   | 拔帜易帜  | 181 |
| 蔼然可亲  | 71  | 安营扎寨 | 96  | 跋山涉水  | 24  |
| 矮人看场  | 254 | 安于现状 | 192 | 把玩不厌  | 192 |
| 矮人看戏  | 254 | 暗度陈仓 | 230 | 罢马不畏鞭 |     |
| 碍手碍脚  | 49  | 暗箭难防 | 224 | 捶     | 136 |
| 爱不忍释  | 192 | 暗箭伤人 | 230 | 白璧微瑕  | 71  |
| 爱不释手  | 192 | 暗气暗恼 | 163 | 白璧无瑕  | 155 |
| 爱财如命  | 106 | 暗送秋波 | 4   | 白黑分明  | 161 |
| 爱鹤失众  | 224 | 暗无天日 | 148 | 白驹过隙  | 156 |
| 爱毛反裘  | 21  | 暗中摸索 | 109 | 白眉赤眼  | 128 |
| 爱莫能助  | 201 | 昂首阔步 | 173 | 白面书生  | 138 |
| 爱人以德  | 1   | 八拜之交 | 126 | 白日见鬼  | 102 |
| 爱屋及乌  | 1   | 八斗之才 | 140 | 白日升天  | 218 |

|               |     |      |     |      |     |
|---------------|-----|------|-----|------|-----|
| 白日做梦          | 76  | 百无一失 | 233 | 饱经风霜 | 91  |
| 白手起家          | 243 | 百依百顺 | 212 | 饱经忧患 | 91  |
| 白头偕老          | 52  | 百战百胜 | 113 | 饱食终日 | 26  |
| 白往黑来          | 9   | 百战不殆 | 268 | 宝刀不老 | 123 |
| 白云苍狗          | 158 | 百折不回 | 222 | 抱残守缺 | 170 |
| 百步穿杨          | 148 | 百折不挠 | 222 | 抱恨终天 | 220 |
| 百尺竿头，<br>更进一步 | 16  | 败俗伤风 | 204 | 抱头鼠窜 | 77  |
| 百川归海          | 207 | 斑驳陆离 | 74  | 抱薪救火 | 196 |
| 百读不厌          | 154 | 班门弄斧 | 244 | 报仇雪恨 | 4   |
| 百端待举          | 212 | 搬弄是非 | 100 | 暴风骤雨 | 78  |
| 百发百中          | 267 | 搬石砸脚 | 6   | 暴露无遗 | 183 |
| 百废俱兴          | 217 | 搬嘴递舌 | 100 | 暴腮龙门 | 153 |
| 百感交集          | 58  | 板上订钉 | 220 | 暴跳如雷 | 35  |
| 百花齐放          | 58  | 半壁江山 | 67  | 暴殄天物 | 143 |
| 百孔千疮          | 129 | 半截入土 | 142 | 豹死留皮 | 85  |
| 百口莫辩          | 13  | 半斤八两 | 8   | 杯弓蛇影 | 224 |
| 百里挑一          | 139 | 半路出家 | 5   | 杯盘狼藉 | 212 |
| 百炼成钢          | 91  | 半死不活 | 88  | 杯水车薪 | 104 |
| 百年不遇          | 72  | 半途而废 | 235 | 悲愤填膺 | 4   |
| 百年大计          | 64  | 半推半就 | 201 | 悲欢离合 | 142 |
| 百年树人          | 126 | 半吞半吐 | 163 | 悲喜交集 | 4   |
| 百思不解          | 91  | 半信半疑 | 248 | 卑鄙无耻 | 128 |
| 百闻不如<br>一见    | 177 | 榜上无名 | 108 | 卑躬屈膝 | 24  |
| 百无聊赖          | 152 | 傍花随柳 | 30  | 背本趋末 | 4   |
|               |     | 包藏祸心 | 237 | 背道而驰 | 48  |
|               |     | 包罗万象 | 120 | 背井离乡 | 102 |

|       |     |      |     |        |     |
|-------|-----|------|-----|--------|-----|
| 背水一战  | 95  | 麻雀   | 109 | 表里如一   | 171 |
| 背信弃义  | 17  | 闭月羞花 | 124 | 别出心裁   | 43  |
| 备多力分  | 49  | 敝帚自珍 | 248 | 别具匠心   | 95  |
| 悖入悖出  | 73  | 必恭必敬 | 154 | 别具一格   | 107 |
| 奔走相告  | 140 | 必由之路 | 214 | 别具慧眼   | 233 |
| 本来面目  | 239 | 璧合珠联 | 139 | 别开生面   | 30  |
| 本末倒置  | 256 | 壁垒森严 | 49  | 别无长物   | 136 |
| 本相毕露  | 239 | 壁立千仞 | 209 | 别有洞天   | 107 |
| 笨口拙舌  | 263 | 避实击虚 | 175 | 别有天地   | 51  |
| 笨鸟先飞  | 121 | 避重就轻 | 77  | 别有用心   | 210 |
| 逼上梁山  | 160 | 睥睨一切 | 56  | 彬彬有礼   | 188 |
| 比比皆是  | 165 | 鞭辟近里 | 122 | 宾至如归   | 247 |
| 比肩继踵  | 140 | 鞭辟入里 | 122 | 冰冻三尺，非 |     |
| 比上不足， |     | 鞭长莫及 | 103 | 一日之寒   | 219 |
| 比下有余  | 55  | 变本加厉 | 8   | 冰天雪窖   | 38  |
| 比物此志  | 230 | 变化多端 | 9   | 伯仲之间   | 50  |
| 笔走龙蛇  | 164 | 变化无常 | 9   | 不省人事   | 77  |
| 彼一时，  |     | 变化无穷 | 12  | 不惜工本   | 148 |
| 此一时   | 156 | 变幻莫测 | 9   | 不相上下   | 50  |
| 毕恭毕敬  | 154 | 变生肘腋 | 158 | 不相问闻   | 111 |
| 闭关锁国  | 51  | 辩才无碍 | 99  | 不肖子孙   | 16  |
| 闭关自守  | 224 | 遍地开花 | 70  | 不屑一顾   | 21  |
| 闭门思过  | 64  | 遍体鳞伤 | 109 | 不修边幅   | 21  |
| 闭门造车  | 252 | 标同伐异 | 3   | 不学无术   | 112 |
| 闭目塞听  | 238 | 标新立异 | 175 | 不言而喻   | 19  |
| 闭塞眼睛捉 |     | 彪炳千古 | 187 | 不厌其烦   | 18  |

|        |     |       |     |      |     |
|--------|-----|-------|-----|------|-----|
| 不厌其详   | 240 | 不知人间有 |     | 步线行针 | 256 |
| 不一而足   | 178 | 羞耻事   | 189 | 才疏学浅 | 22  |
| 不夷不惠   | 248 | 不知深浅  | 11  | 才疏意广 | 22  |
| 不遗余力   | 137 | 不知死活  | 20  | 才疏志大 | 254 |
| 不以规矩，不 |     | 不知所措  | 20  | 采兰赠药 | 119 |
| 能成方圆   | 267 | 不知所终  | 20  | 彩凤随鸦 | 124 |
| 不以为然   | 18  | 不置可否  | 17  | 餐风饮露 | 107 |
| 不易一字   | 188 | 不主故常  | 14  | 蚕食鲸吞 | 228 |
| 不易之论   | 108 | 不着边际  | 169 | 残兵败将 | 246 |
| 不亦乐乎   | 47  | 不自量力  | 21  | 残羹冷炙 | 10  |
| 不义之财   | 19  | 不足齿数  | 164 | 残花败柳 | 151 |
| 不翼而飞   | 42  | 不足挂齿  | 21  | 残无人道 | 206 |
| 不因熟人   | 62  | 不足为凭  | 16  | 残渣余孽 | 23  |
| 不阴不阳   | 117 | 不足为奇  | 128 | 惨不忍睹 | 151 |
| 不饮盗泉   | 104 | 不足为训  | 21  | 惨淡经营 | 99  |
| 不由分说   | 17  | 不伎不求  | 12  | 惨绝人寰 | 158 |
| 不由自主   | 260 | 布被瓦器  | 152 | 惨绿少年 | 85  |
| 不虞之誉   | 112 | 布袋里老鸦 | 77  | 沧海横流 | 250 |
| 不约而同   | 110 | 布帆无恙  | 108 | 沧海桑田 | 158 |
| 不赞一词   | 216 | 布鼓雷门  | 243 | 沧海一粟 | 115 |
| 不择手段   | 150 | 布衣蔬食  | 152 | 沧海遗珠 | 108 |
| 不折不扣   | 155 | 布衣韦带  | 113 | 藏垢纳污 | 3   |
| 不知凡几   | 178 | 步步为营  | 204 | 藏龙卧虎 | 225 |
| 不知甘苦   | 12  | 步调一致  | 204 | 藏器待时 | 207 |
| 不知好歹   | 20  | 步履维艰  | 205 | 藏巧于拙 | 233 |
| 不知轻重   | 11  | 步人后尘  | 258 | 藏头露尾 | 45  |

|      |     |        |     |        |     |
|------|-----|--------|-----|--------|-----|
| 操刀必割 | 8   | 差三错四   | 41  | 车载斗量   | 165 |
| 操刀伤锦 | 12  | 差之毫厘，谬 |     | 扯篷拉纤   | 227 |
| 操奇计赢 | 147 | 以千里    | 147 | 彻头彻尾   | 32  |
| 操之过急 | 87  | 姹紫嫣红   | 58  | 臣心如水   | 135 |
| 草草了事 | 23  | 豺狼成性   | 186 | 尘饭涂羹   | 112 |
| 草间求活 | 174 | 豺狼当道   | 23  | 尘垢秕糠   | 173 |
| 草木皆兵 | 220 | 豺狼之吻   | 23  | 沉默寡言   | 205 |
| 草率收兵 | 108 | 蝉不知雪   | 84  | 沉吟不决   | 238 |
| 草行露宿 | 263 | 蝉腹龟肠   | 78  | 沉鱼落雁   | 124 |
| 草菅人命 | 143 | 馋涎欲滴   | 174 | 沉冤莫白   | 45  |
| 厕身其间 | 113 | 缠绵悱恻   | 120 | 陈陈相因   | 247 |
| 厕足其间 | 118 | 谄上欺下   | 44  | 陈词滥调   | 25  |
| 侧目而视 | 81  | 长耳飞目   | 197 | 陈规陋习   | 25  |
| 曾几何时 | 109 | 长歌当哭   | 229 | 趁火打劫   | 25  |
| 曾经沧海 | 84  | 长驱直入   | 95  | 趁热打铁   | 25  |
| 层出不穷 | 87  | 长袖善舞   | 233 | 撑肠拄腹   | 44  |
| 层见叠出 | 219 | 长吁短叹   | 21  | 称孤道寡   | 100 |
| 屈峦叠嶂 | 146 | 长枕大被   | 206 | 称王称霸   | 220 |
| 猝不及防 | 100 | 肠肥脑满   | 15  | 称心如意   | 133 |
| 翠绕珠围 | 54  | 畅所欲言   | 179 | 称雨道晴   | 167 |
| 厝火积薪 | 225 | 超尘拔俗   | 238 | 瞠乎其后   | 242 |
| 插翅难飞 | 194 | 超凡入圣   | 123 | 瞠目结舌   | 163 |
| 插圈弄套 | 165 | 超群绝伦   | 24  | 城狐社鼠   | 246 |
| 察察为明 | 257 | 超然物外   | 254 | 城门失火，殃 |     |
| 察言观色 | 65  | 巢毁卵破   | 36  | 及池鱼    | 223 |
| 差强人意 | 36  | 车水马龙   | 139 | 城下之盟   | 5   |

|        |     |        |     |      |     |
|--------|-----|--------|-----|------|-----|
| 成龙配套   | 126 | 一智     | 164 | 赤口毒舌 | 210 |
| 成仁取义   | 186 | 吃着不尽   | 151 | 赤舌烧城 | 77  |
| 成人之美   | 26  | 痴儿呆女   | 177 | 赤手空拳 | 162 |
| 成事不足，败 |     | 痴人说梦   | 167 | 赤子之心 | 199 |
| 事有余    | 159 | 痴心妄想   | 219 | 嗤之以鼻 | 96  |
| 成也萧何，败 |     | 鸱目虎吻   | 195 | 充耳不闻 | 94  |
| 也萧何    | 26  | 鸱鸢嗜鼠   | 161 | 充类至尽 | 93  |
| 成则为王，败 |     | 持筹握算   | 65  | 冲锋陷阵 | 268 |
| 则为贼    | 26  | 持衡拥璇   | 246 | 冲口而出 | 14  |
| 成竹在胸   | 161 | 持禄养交   | 87  | 虫臂鼠肝 | 79  |
|        | 268 | 持平之论   | 61  | 重整旗鼓 | 153 |
| 乘风破浪   | 254 | 持之以恒   | 24  | 宠辱不惊 | 40  |
| 乘坚策肥   | 152 | 持之有故   | 175 | 宠辱若惊 | 80  |
| 乘人之危   | 25  | 池鱼笼鸟   | 163 | 抽筋拔骨 | 50  |
| 乘伪行诈   | 123 | 池鱼之殃   | 163 | 抽薪止沸 | 31  |
| 乘虚而入   | 25  | 齿亡舌存   | 56  | 踌躇满志 | 201 |
| 惩恶劝善   | 26  | 齿牙春色   | 166 | 稠人广众 | 140 |
| 惩前毖后   | 192 | 齿牙余论   | 12  | 愁眉不展 | 202 |
| 惩一警百   | 227 | 尺布斗粟   | 206 | 愁眉泪眼 | 4   |
| 诚心诚意   | 243 | 尺短寸长   | 57  | 愁眉锁眼 | 231 |
| 承先启后   | 81  | 尺幅千里   | 182 | 愁云惨雾 | 107 |
| 承颜候色   | 97  | 尺蚓穿提，能 |     | 臭不可当 | 117 |
| 逞性妄为   | 232 | 漂一邑    | 21  | 臭名远扬 | 75  |
| 秤斤注两   | 88  | 赤膊上阵   | 133 | 臭名昭著 | 75  |
| 吃里爬外   | 87  | 赤胆忠心   | 155 | 臭肉来蝇 | 259 |
| 吃一堑，长  |     | 赤地千里   | 223 | 臭味相投 | 7   |

|      |     |       |     |      |     |
|------|-----|-------|-----|------|-----|
| 初出茅庐 | 55  | 楚材晋用  | 5   | 吹毛求疵 | 63  |
| 初露锋芒 | 56  | 楚楚可怜  | 124 | 吹影镂尘 | 60  |
| 出尔反尔 | 48  | 楚囚对泣  | 243 | 炊金馔玉 | 51  |
| 出谷迁乔 | 41  | 础润而雨  | 84  | 炊沙成饭 | 50  |
| 出乖露丑 | 244 | 触景生情  | 96  | 捶胸顿足 | 49  |
| 出何典记 | 190 | 触类旁通  | 246 | 垂手可得 | 40  |
| 出将入相 | 83  | 触目皆是  | 211 | 垂死挣扎 | 106 |
| 出口成章 | 183 | 触目惊心  | 96  | 垂头丧气 | 223 |
| 出口入耳 | 28  | 处心积虑  | 196 | 垂涎三尺 | 174 |
| 出类拔萃 | 127 | 处之泰然  | 14  | 垂涎欲滴 | 174 |
| 出其不意 | 25  | 川流不息  | 141 | 春风得意 | 239 |
| 出奇制胜 | 228 | 穿壁引光  | 82  | 春风风人 | 79  |
| 出人头地 | 24  | 穿井得人  | 74  | 春风化雨 | 105 |
| 出人意表 | 28  | 穿云裂石  | 151 | 春风满面 | 237 |
| 出入人罪 | 47  | 穿凿附会  | 153 | 春光明媚 | 30  |
| 出神入化 | 183 | 穿针引线  | 243 | 春兰秋菊 | 57  |
| 出生入死 | 109 | 传闻异辞  | 30  | 春秋鼎盛 | 250 |
| 出手得卢 | 218 | 船多不碍路 | 58  | 春山如笑 | 30  |
| 出水芙蓉 | 154 | 疮痍满目  | 38  | 春树暮云 | 170 |
|      | 176 | 窗明几净  | 48  | 醇酒妇人 | 25  |
| 出头露面 | 241 | 床上安床  | 11  | 唇不离腮 | 64  |
| 出言不逊 | 163 | 床头金尽  | 132 | 唇齿相依 | 64  |
| 锄强扶弱 | 24  | 闯荡江湖  | 5   | 唇焦舌敝 | 169 |
| 除暴安民 | 24  | 创巨痛深  | 245 | 唇枪舌剑 | 9   |
| 除恶务尽 | 135 | 吹弹得破  | 115 | 唇亡齿寒 | 102 |
| 除旧布新 | 28  | 吹糠见米  | 85  | 鹑衣百结 | 129 |

|        |     |      |     |       |     |
|--------|-----|------|-----|-------|-----|
| 蠢蠢欲动   | 41  | 从中作梗 | 243 | 搓手顿脚  | 85  |
| 踔厉风发   | 90  | 粗茶淡饭 | 225 | 措手不及  | 28  |
| 绰绰有余   | 72  | 粗服乱头 | 14  | 措置裕如  | 32  |
| 绰有余裕   | 14  | 粗心大意 | 265 | 错彩镂金  | 154 |
| 绰约多姿   | 125 | 粗心浮气 | 13  | 错综复杂  | 130 |
| 啜菽饮水   | 152 | 粗枝大叶 | 60  | 搭在篮里便 |     |
| 慈眉善目   | 144 | 粗制滥造 | 254 | 是菜    | 40  |
| 词不达意   | 31  | 粗中有细 | 170 | 打草惊蛇  | 203 |
| 词钝意虚   | 232 | 促膝谈心 | 269 | 打成一片  | 55  |
| 此唱彼和   | 73  | 窜端匿迹 | 211 | 打躬作揖  | 236 |
| 此地无银三  |     | 摧枯拉朽 | 144 | 打家劫舍  | 26  |
| 百两     | 196 | 摧枯折腐 | 134 | 打落水狗  | 81  |
| 此起彼伏   | 104 | 摧眉折腰 | 110 | 打马虎眼  | 63  |
| 刺刺不休   | 170 | 摧陷廓清 | 198 | 打破沙锅问 |     |
| 刺股悬梁   | 98  | 存而不论 | 139 | 到底    | 258 |
| 从长计议   | 15  | 存亡绝续 | 94  | 打情骂俏  | 119 |
| 从井救人   | 264 | 寸步难行 | 263 | 打牙犯嘴  | 108 |
| 从令如流   | 95  | 寸草春晖 | 53  | 大败亏输  | 34  |
| 从容不迫   | 14  | 寸木岑楼 | 24  | 大材小用  | 227 |
| 从容就义   | 249 | 寸丝半粟 | 79  | 大处着墨  | 267 |
| 从善如登，从 |     | 寸丝不挂 | 27  | 大吹大擂  | 36  |
| 恶如崩    | 207 | 寸田尺宅 | 184 | 大吹法螺  | 99  |
| 从善如流   | 121 | 寸铁杀人 | 256 | 大醇小疵  | 36  |
| 从天而降   | 28  | 寸阴若岁 | 224 | 大慈大悲  | 199 |
| 从天而下   | 28  | 蹉跎岁月 | 206 | 大打出手  | 43  |
| 从心所欲   | 172 | 撮盐入火 | 205 | 大刀阔斧  | 67  |

|       |     |      |     |       |     |
|-------|-----|------|-----|-------|-----|
| 大敌当前  | 115 | 大煞风景 | 107 | 呆若木鸡  | 99  |
| 大而无当  | 39  |      | 241 | 呆头呆脑  | 170 |
| 大发慈悲  | 130 | 大声疾呼 | 56  | 戴盆望天  | 205 |
| 大发雷霆  | 35  | 大失所望 | 173 | 戴头识脸  | 235 |
| 大放厥词  | 35  | 大势所趋 | 249 | 戴月披星  | 144 |
| 大腹便便  | 44  | 大势已去 | 234 |       | 245 |
| 大功告成  | 94  | 大是大非 | 234 | 待价而沽  | 166 |
| 大公无私  | 62  | 大手大脚 | 74  | 待人接物  | 59  |
| 大海捞针  | 72  | 大书特书 | 64  | 担惊受怕  | 37  |
| 大含细入  | 183 | 大庭广众 | 94  | 担雪塞井  | 181 |
| 大寒索裘  | 128 | 大喜过望 | 87  | 丹之所藏者 |     |
| 大旱望云霓 | 98  | 大显神通 | 27  | 赤     | 85  |
| 大惑不解  | 114 | 大相径庭 | 8   | 单刀直入  | 170 |
| 大惊失色  | 68  | 大兴土木 | 35  | 单枪匹马  | 37  |
| 大惊小怪  | 67  | 大言不惭 | 167 | 箪食瓢饮  | 1   |
| 大快人心  | 158 | 大义凛然 | 186 | 殚见洽闻  | 84  |
| 大名鼎鼎  | 117 | 大义灭亲 | 187 | 殚精竭虑  | 157 |
| 大谬不然  | 34  | 大有可观 | 72  | 殚思极虑  | 157 |
| 大模大样  | 2   | 大有可为 | 233 | 胆大包天  | 37  |
| 大莫与京  | 34  | 大有人在 | 118 | 胆大妄为  | 69  |
| 大器晚成  | 120 | 大有作为 | 120 | 胆大心小  | 67  |
| 大千世界  | 66  | 大张旗鼓 | 119 | 胆破心寒  | 232 |
| 大巧若拙  | 249 | 大张挞伐 | 35  | 胆小如鼠  | 37  |
| 大权独揽  | 215 | 大智若愚 | 255 | 胆战心惊  | 154 |
| 大权旁落  | 36  | 大辘椎轮 | 89  | 旦旦而伐  | 176 |
| 大杀风景  | 241 | 呆里撒奸 | 182 | 旦种暮成  | 162 |

|        |     |       |     |       |     |
|--------|-----|-------|-----|-------|-----|
| 淡泊明志   | 21  | 蹈常袭故  | 224 | 得道多助， |     |
| 淡而不厌   | 81  | 倒绷孩儿  | 218 | 失道寡助  | 246 |
| 淡然置之   | 69  | 倒持泰阿  | 36  | 得过且过  | 52  |
| 弹尽援绝   | 29  | 倒打一耙  | 259 | 得陇望蜀  | 174 |
| 弹丸之地   | 79  | 倒戈卸甲  | 49  | 得饶人处且 |     |
| 当断不断   | 226 | 倒果为因  | 41  | 饶人    | 265 |
| 当机立断   | 115 | 倒裳索领  | 257 | 得胜回朝  | 153 |
| 当局者迷，旁 |     | 倒行逆施  | 267 | 得天独厚  | 173 |
| 观者清    | 38  | 倒悬之急  | 29  | 得未曾有  | 32  |
| 当面锣，对  |     | 倒置干戈  | 191 | 得心应手  | 80  |
| 面鼓     | 115 | 悼心失图  | 223 | 得意忘形  | 223 |
| 当面输心背  |     | 道不同不相 |     | 得意忘言  | 8   |
| 里笑     | 37  | 为谋    | 222 | 得鱼忘筌  | 34  |
| 当仁不让   | 239 | 道高一尺， |     | 灯红酒绿  | 208 |
| 当头棒喝   | 33  | 魔高一丈  | 137 | 登峰造极  | 208 |
| 当头对面   | 37  | 道路以目  | 141 | 登高一呼  | 237 |
| 当头一棒   | 163 | 道貌岸然  | 150 | 登高自卑  | 236 |
| 当务之急   | 38  | 道旁苦李  | 11  | 登堂入室  | 208 |
| 当行出色   | 264 | 道听途说  | 110 | 等而下之  | 232 |
| 当之无愧   | 37  | 盗憎主人  | 198 | 等量齐观  | 18  |
| 当众出丑   | 38  | 德薄能鲜  | 40  | 等米下锅  | 152 |
| 党同伐异   | 60  | 德才兼备  | 127 | 等闲视之  | 21  |
| 荡检逾闲   | 204 | 德高望重  | 39  | 堤溃蚁穴  | 198 |
| 荡然无存   | 239 | 德厚流光  | 39  | 低眉折腰  | 243 |
| 刀过竹解   | 166 | 得不偿失  | 40  | 低三下四  | 67  |
| 刀山火海   | 79  | 得寸进尺  | 174 | 低声下气  | 61  |

|      |     |       |     |        |     |
|------|-----|-------|-----|--------|-----|
| 低首下心 | 137 | 点铁成金  | 54  | 丁一确二   | 116 |
| 羝羊触藩 | 89  | 点头哈腰  | 206 | 钉嘴铁舌   | 263 |
| 滴粉搓酥 | 124 | 电光朝露  | 33  | 顶礼膜拜   | 27  |
| 滴水成冰 | 176 | 电光石火  | 160 | 顶天立地   | 203 |
| 滴水穿石 | 253 | 雕虫小技  | 184 | 鼎鼎大名   | 117 |
| 涤瑕荡秽 | 135 | 雕肝琢肾  | 199 | 鼎新革故   | 28  |
| 抵掌而谈 | 174 | 雕阑玉砌  | 53  | 丢盔卸甲   | 27  |
| 抵瑕蹈隙 | 61  | 雕梁画栋  | 233 | 丢三落四   | 266 |
| 地丑德齐 | 8   | 雕心雁爪  | 199 | 丢卒保车   | 42  |
| 地大物博 | 35  | 雕章镂句  | 30  | 东窗事发   | 224 |
| 地广人稀 | 41  | 雕蛸镂蛤  | 90  | 东风吹马耳  | 113 |
| 地角天涯 | 127 | 刁天决地  | 34  | 东扶西倒   | 63  |
| 地久天长 | 156 | 刁钻古怪  | 86  | 东海扬尘   | 153 |
| 地利人和 | 41  | 掉以轻心  | 109 | 东箭南金   | 93  |
| 地平天成 | 217 | 吊儿郎当  | 263 | 东拉西扯   | 169 |
| 地上天官 | 143 | 吊死问疾  | 65  | 东怒西怨   | 72  |
| 地狱变相 | 148 | 调兵遣将  | 42  | 东跑西颠   | 33  |
| 地主之谊 | 256 | 调虎离山  | 143 | 东山再起   | 154 |
| 颠倒黑白 | 135 | 调三窝四  | 3   | 东施效颦   | 112 |
| 颠倒乾坤 | 6   | 调三斡四  | 3   | 东食西宿   | 174 |
| 颠倒是非 | 33  | 调嘴学舌  | 3   | 东涂西抹   | 172 |
| 颠来倒去 | 47  | 叠床架屋  | 255 | 东张西望   | 38  |
| 颠沛流离 | 152 | 喋喋不休  | 101 | 东走西顾   | 63  |
| 颠扑不破 | 227 | 丁公凿井  | 74  | 冬寒抱冰，夏 |     |
| 颠三倒四 | 33  | 丁是丁，卯 |     | 热握火    | 93  |
| 掂斤播两 | 244 | 是卯    | 266 | 冬日可爱   | 137 |

|      |     |        |     |      |     |
|------|-----|--------|-----|------|-----|
| 冬日夏云 | 187 | 独立自主   | 261 | 断头将军 | 83  |
| 冬扇夏炉 | 14  | 独木不成林  | 215 | 断线风筝 | 217 |
| 动如脱兔 | 204 | 独木难支   | 83  | 断章取义 | 13  |
| 动辄得咎 | 42  |        | 215 | 堆金叠玉 | 22  |
| 栋梁之材 | 120 | 独善其身   | 252 | 对簿公庭 | 241 |
| 恫疑虚喝 | 207 | 独树一帜   | 30  | 对床夜雨 | 134 |
| 洞察一切 | 65  | 独行其是   | 254 | 对答如流 | 99  |
| 洞见症结 | 65  | 独占鳌头   | 246 | 对景挂画 | 6   |
| 洞若观火 | 97  | 睹物思人   | 97  | 对牛弹琴 | 44  |
| 洞天福地 | 52  | 杜渐防微；度 |     | 对症下药 | 249 |
| 洞烛其奸 | 97  | 渐防萌    | 159 | 对症之药 | 93  |
| 抖擞精神 | 249 | 杜口裹足   | 234 | 顿挫抑扬 | 151 |
| 斗而铸锥 | 203 | 杜口吞声   | 216 | 顿开茅塞 | 44  |
| 斗酒百篇 | 22  | 杜门却扫   | 8   |      | 171 |
| 斗志昂扬 | 43  | 肚里泪下   | 234 | 顿足不前 | 178 |
| 斗筭之器 | 131 | 度日如年   | 144 | 囤积居奇 | 36  |
| 豆重榆瞑 | 6   | 妒贤嫉能   | 80  | 钝口拙腮 | 263 |
| 豆蔻年华 | 124 | 蠹居棋处   | 75  | 钝学累功 | 237 |
| 毒手尊拳 | 190 | 蠹众木折   | 15  | 掇臀捧屁 | 125 |
| 独步一时 | 133 | 蠹啄剖梁柱  | 159 | 多才多艺 | 94  |
| 独出心裁 | 195 | 端倪可察   | 221 | 多愁善感 | 55  |
| 独当一面 | 43  | 短小精悍   | 84  | 多此一举 | 264 |
| 独断专横 | 215 | 断编残简；断 |     | 多端寡要 | 180 |
| 独夫民贼 | 44  | 简残编    | 23  | 多多益善 | 240 |
| 独具匠心 | 242 | 断梗飘蓬   | 42  | 多口阿师 | 192 |
| 独具慧眼 | 211 | 断鹤续凫   | 204 | 多谋善断 | 72  |